मधुवन ओम् शान्ति अंक 254 सितम्बर 2013

पत्र-पुष्प

निमित्त टीचर्स बहिनें तथा सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनों प्रति मधुर याद पत्र
(09-08-13)

प्राणप्यारे सर्व के रक्षक हम सबके अति प्रिय बापदादा के सभी मीठे मीठे बाबा के अनन्य रत्न, हमारी निमित्त बनी हुई बेहद सेवाधारी टीचर्स बहिनें तथा देश विदेश के सर्व ब्राह्मण कुल भूषण भाई बहिनें,

ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न मधुर याद स्वीकार करना जी।

बाद समाचार - आज आप सबसे मिनी मधुबन (लण्डन) से मिल रही हूँ। मधुबन की रिमझिम से छुट्टी ले दो सप्ताह के लिए लण्डन आई हूँ, यहाँ भी ग्लोबल रिट्रीट सेन्टर (GRC) में टीचर्स के लिए ग्रुपवाइज़ रिट्रीट चल रही हैं। सभी खूब रिफ्रेश हो रहे हैं। यह मास तो राखी का विशेष मास है, तो चारों ओर से आप सबकी स्नेह भरी सुन्दर-सुन्दर राखियां और याद-पत्र मिलते रहते हैं। मैं तो कहती – वाह बाबा वाह! वाह आपके सिकीलधे, लाडले, स्नेही बच्चे वाह! आप सबका स्नेह और दुआयें मिलती रहती हैं। सबको रिटर्न में मेरी ओर से पदमगुणा यादप्यार स्वीकार हो। मेरा तो यही प्यारा गीत है - बाबा, मुरली, मधुबन, मेरे लिए इन तीन के सिवाए और कुछ भी नहीं है। बाबा के सामने बैठते, बाबा का एक एक महावाक्य याद आता है। बाबा कहे बच्चे मनमनाभव, मध्याजी भव, फिर कहता अशरीरी भव, देही-अभिमानी भव। बाबा ने जो नियम बनाकर दिये हैं, उसमें एक्यूरेट रहना है। फिर अन्तर्मुखी रहने से बाबा सामने आता है तो कितना सुख मिलता है। फिर एकाग्रता की शक्ति से एक बाबा दूसरा न कोई, व्यर्थ चिंतन स्वत: समाप्त हो जाता है। बाकी बाबा जैसे कानों में सभी बच्चों को इशारा दे रहा है - बच्चे अब ईर्ष्या, आलस्य और अलबेलेपन को छोड़ वैजयन्ती माला में आने की रेस करो। ऐसे निश्चयबुद्धि विजयी बनो जो कभी कुछ भी हो जाए, कोई भी कारण बन जाए लेकिन संकल्प मात्र भी संशय न आये। अटल निश्चय बुद्धि से वैजयन्ती माला में आ जायेंगे।

बोलो, इस राखी बंधन पर ऐसे वैजयन्ती माला में आने का सभी संकल्प कर रहे हो ना! देखो, यह अगस्त मास हमारी मीठी दादी का भी मास है, वह भी सबको यही पाठ पढ़ाती रही कि अब विकर्माजीत, कर्मातीत बनना है। दादी के दिल में तो सदा एक बाबा बाबा ही बसता था। दादी की तो सभी ने बहुत शक्तिशाली पालना ली है। तो दादी के समान अब न्यारा प्यारा बन कर्मातीत बनना ही है। मुझे तो सदा यही संकल्प रहता कि बाबा मैं इस शरीर में रहते हुए कर्मातीत स्थिति का अनुभव करूं। तो ऐसे लगता जैसे बाबा मेरा यह संकल्प पूरा कर रहा है। साकार में भी मीठे बाबा से इतना प्यार पाया है, अभी फिर अव्यक्त पालना से, व्यक्त भाव से परे रहने की अच्छी गिफ्ट दी है। बाकी बाबा को जो सेवा करानी है, करनकरावनहार बनकर कर भी रहा है, करा भी रहा है। मैं आत्मा तो शरीर में बैठे बाबा के साथ रहते सुख शान्ति प्रेम में मगन हो रही हूँ। बोलो, आप सब भी यही अनुभव करते हो ना!

मेरी तो देश विदेश के सभी भाई बहिनों के प्रति यही शुभ भावना रहती है कि अब सभी एक की लगन में मगन रह हर प्रकार के लगाव से मुक्त रहें। यह लगन की अग्नि सब विघ्न समाप्त कर देगी। जहाँ लगन है वहाँ लगाव नहीं, दिल खुश, दिमाग ठण्डा, स्वभाव सरल... अब तो इसी अनुभवों में रहना है। बाकी मधुबन की रौनक तो न्यारी प्यारी है ही। सब कितना प्यार से भाग-भाग कर अपने प्यारे मधुबन घर में आते हैं और अनुभवों की थालियां भर-भर कर जाते हैं।

अच्छा - सभी को बहुत-बहुत दिल से स्नेह भरी याद के साथ राखी बंधन और अपने प्यारे भविष्य महाराजकुमार श्रीकृष्ण के जन्म दिवस की खूब-खूब बधाईयां..

ईश्वरीय सेवा में,
बी.के. जानकी

ये अव्यक्त इशारे

परिवर्तन शक्ति को कार्य में लगाओ

1) परिवर्तन सृष्टि का नियम है, हर चीज़ परिवर्तन तो होनी ही है लेकिन सही रूप में, श्रेष्ठ रूप में परिवर्तन करने से श्रेष्ठ प्राप्ति होती है। जो विघ्न आया है समय प्रमाण जायेगा जरूर लेकिन समय से पहले अपने परिवर्तन की शक्ति से पहले ही परिवर्तन कर लिया तो इसकी प्राप्ति आपको हो जायेगी।

2) विश्व को परिवर्तन करने वाले पहले स्वयं को परिवर्तन करते हैं। अभी-अभी बाप-दादा डायरेक्शन दें कि एक सेकेण्ड में अपनी स्मृति को परिवर्तन कर स्वयं को देह नहीं आत्मा के स्वरुप में स्थित होकर देखो, अपनी वृत्ति को, अपने स्वभाव और संस्कार को सेकेण्ड में परिवर्तन कर लो, अपने संकल्प को सेकेण्ड में व्यर्थ से समर्थ में परिवर्तन कर लो, तो कर सकते हो? सेकेण्ड में साकार वतन से पार निराकारी परमधाम के निवासी बन सकते हो? इसको कहा जाता है–परिवर्तन शक्ति। संगमयुग पर विशेष खेल ही परिवर्तन का है।

3) परिवर्तन करने की शक्ति न होने के कारण चाहते हुए भी, साधन अपनाते हुए भी, संग करते हुए भी, यथा-शक्ति नियमों पर चलते हुए भी और स्वयं को ब्राह्मण कहलाते हुए भी अपने-आप से सन्तुष्ट नहीं। एक परिवर्तन करने की शक्ति सर्व शक्तिमान् बाप और सर्व श्रेष्ठ आत्माओं के समीप जाने का साधन बन जाती है। परिवर्तन शक्ति नहीं तो सदैव हर प्राप्ति से वंचित अपने को किनारे पर खड़ा हुआ अनुभव करेंगे। सब बातों में दूर-दूर देखने और सुनने वाला अपने को अनुभव करेंगे। सदा स्नेह, सहयोग और शक्ति के अनुभव करने के प्यासे रहेंगे।

4) समय की समीपता के प्रमाण स्व-परिवर्तन की शक्ति ऐसी तीव्र होनी चाहिए जैसे कागज के ऊपर बिन्दी लगाओ तो कितने में लगती है? बिन्दी लगाने में कितना समय लगता है? सेकण्ड भी नहीं। तो जैसे समय की रफ्तार तेज़ है, स्व-परिवर्तन की शक्ति ऐसे तीव्र होनी है और जब परिवर्तन कहते हैं तो परिवर्तन के आगे पहले स्व शब्द सदा याद रखो। परिवर्तन नहीं, स्व-परिवर्तन।

5) नॉलेजफुल तो सबमें बन गये हो, लेकिन जो चाहते हो होना नहीं चाहिए, वह हो जाता है, तो कारण क्या है? परिवर्तन करने की शक्ति कम है। मैजॉरिटी में दिखाई देता है कि परिवर्तन की शक्ति को समझते भी हैं, वर्णन भी करते हैं, अगर सभी को परिवर्तन शक्ति की टॉपिक पर लिखने के लिए कहें या भाषण करने के लिए कहें तो सभी बहुत होशियार हैं, बहुत अच्छा भाषण भी कर सकते हैं, लिख भी सकते हैं और दूसरा कोई आता है उसको समझाते भी बहुत अच्छा हैं - कोई हर्जा नहीं, परिवर्तन कर लो। लेकिन स्वयं में परिवर्तन करने की शक्ति कहाँ तक है!

6) जैसे साइंस वाले सब बात में तीव्रगति कर रहे हैं और परिवर्तन की शक्ति भी ज्यादा कार्य में लगा रहे हैं। तो साइलेन्स की शक्ति वाले अभी लक्ष्य रखो अगर परिवर्तन करना है, नॉलेजफुल हो तो अभी पॉवरफुल बनो, सेकण्ड की गति से। कर रहे हैं, हो जायेंगे... कर लेंगे.., नहीं। हो सकता है या मुश्किल है?

7) कई बच्चे सच्ची दिल वाले हैं, महसूस जल्दी करते हैं लेकिन परिवर्तन की शक्ति अभी और एड करनी है। परिवर्तन की शक्ति एडीशन करो। जैसे जड़ वस्तु को किसी भी रूप में परिवर्तन कर सकते हो वैसे कर्मेन्द्रियों को विकारी से निर्विकारी वा विकारों के वश आग में जलती हुई कर्मेन्द्रियों को शीतलता में ले आओ तब कहेंगे परिवर्तन शक्ति काम में लगाई।

8) साइलेन्स की शक्ति द्वारा परिवर्तन शक्ति को कार्य में लगाओ। निगेटिव को पॉजिटिव में परिवर्तन कर दो। माया कितने भी प्रकार की समस्या के रूप में आये लेकिन आप परिवर्तन की शक्ति से, साइलेन्स की शक्ति से समस्या को समाधान स्वरूप बना दो। कारण को निवारण रूप में बदल दो। यह परिवर्तन शक्ति आप बच्चों को बाप द्वारा वर्से में मिली है। परिवर्तन की शक्ति वालों को बापदादा अमर भव का वरदान दे रहे हैं।

9) जब 5 तत्वों प्रति भी परिवर्तन की भावना रखते हो तो क्या ब्राह्मण आत्मा प्रति शुभ भावना का, पॉजिटिव वायब्रेशन नहीं रख सकते! ऐसे नहीं कि यह है ही ऐसा, लेकिन उसके प्रति भी पॉजिटिव वायब्रेशन रखो क्योंकि वायब्रेशन से

वायुमण्डल बनता है। चाहे वह रांग है लेकिन आप रांग को अपने दिल में धारण नहीं करो। जब भक्तों को आपके जड़ चित्र क्षमा करते तो आप चैतन्य देवता लव और लॉ के बैलेन्स सहित क्षमा कर परिवर्तन नहीं कर सकते हो! इससे ही पॉजिटिव वायब्रेशन से वायुमण्डल पॉजिटिव बना सकते हो।

10) यह प्रैक्टिस करो कि जहाँ पर भी बुद्धि को लगाना चाहता हूँ, लगती भी है कि नहीं, वैसे ही जैसे कि पांव जहाँ भी चलाने चाहो, चलते हैं ना। इसी प्रकार से आपकी बुद्धि भी पांव मिसल हो जायेगी। अब बुद्धि को लौकिक से अलौकिक बातों में परिवर्तन करना है। तो अवस्था में भी परिवर्तन आ जायेगा।

11) जिस्मानी चीज़ को देखते हुए उस जिस्मानी लौकिक चीज़ को अलौकिक रूप में परिवर्तन कर दो। लौकिक में अलौकिकता की स्मृति रखो। भल लौकिक सम्बन्धियों को देखते हो लेकिन यह समझो कि यह भी ब्रह्मा बाप के बच्चे हमारी पिछली बिरादरी है। तो लौकिक सम्बन्धी भी ब्रह्मावंशी हैं लेकिन वह नजदीक सम्बन्ध के हैं, वह दूर के हैं।

12) हरेक चीज़ को लौकिक से अलौकिकता में परिवर्तन करना है, जिससे लोगों को मालूम हो कि यह कोई विशेष अलौकिक आत्मा है। लौकिक में रहते हुए भी हम लोगों से न्यारे हैं। अपने को आत्मिक रूप में न्यारा समझना है। कर्तव्य से न्यारा होना तो सहज है, उससे दुनिया को प्यारे नहीं लगेंगे, दुनिया को प्यारे तब लगेंगे जब शरीर से न्यारी आत्मा रूप में कार्य करेंगे।

13) कई बार अपने को देख बाहर की बातों को देख लेते हैं और बातों को पहले चेन्ज कर लेते हैं, अपने को पीछे चेन्ज करते इसलिए प्रभाव नहीं पड़ता है। प्रभाव ड़ालने के लिए पहले अपने को परिवर्तन में लाओ। अपनी दृष्टि, वृत्ति, स्मृति को, सम्पत्ति को, समय को परिवर्तन में लाओ तब दुनिया को प्रिय लगेंगे

14) कोई भी बात की कमी फील होती है तो उसको एक सेकेण्ड में परिवर्तन में लाना इसको कहा जाता है जम्प। देखने में ऊंचा आता है लेकिन है बहुत सहज। सिर्फ निश्चय और हिम्मत चाहिए। निश्चय वालों की विजय तो कल्प पहले भी हुई थी, वह अभी भी हुई पड़ी है। इतना पक्का अपने को बनाना है।

15) बाप सर्वशक्तिमान है और बच्चे कहें मेरे में संकल्पों को रोकने की भी शक्ति नहीं है! बाप सृष्टि को बदलते हैं, बच्चे अपने को भी नहीं बदल सकते! तो सोचो कि बाप क्या है और हम क्या हैं? तो अपने ऊपर खुद ही शर्म आयेगा। अपनी चलन को परिवर्तन में लाना है। वाणी से इतना नहीं समझेंगे। परिवर्तन देख खुद ही पूछेंगे कि आपको ऐसा बनाने वाला कौन? कोई बदलकर दिखाता है तो न चाहते हुए भी उनसे पूछते हैं क्या हुआ, कैसे किया, तो आप की भी चलन को देख खुद खींचेंगे।

16) ऐसे नहीं समझना कि हम तो अभी आये हैं, नये हैं, यहाँ तो सेकेण्ड का सौदा है। एक सेकेण्ड में जन्म सिद्ध अधिकार ले सकते हो इसलिए ऐसा तीव्र पुरुषार्थ करो, यही युक्ति मिलती है। जो भी बात सामने आये तो यह लक्ष्य रखो कि एक सेकेण्ड में बदल जाये। जो भी पुराने संस्कार हैं और पुरानी नेचर है वह बदलकर ईश्वरीय बन जाये। कोई भी पुराना संस्कार, पुरानी आदत न रहे। आपके परिवर्तन से अनेक लोग सन्तुष्ट होंगे। सदैव यही कोशिश करनी है कि हमारी चलन द्वारा कोई को भी दु:ख न हो। मेरी चलन, संकल्प, वाणी, हर कर्म सुखदाई हो। यह है ब्राह्मण कुल की रीति।

शिवबाबा याद है ? 16-2-12 *ओम् शान्ति* *मधुबन*

''सबके साथ सम्बन्ध-सम्पर्क में आते सेवा करते इतने श्रेष्ठ कर्म करो जो कर्मातीत बन जाओ''

(दादी जानकी)

हम अच्छे संग में रहने वाले हैं, कोई ऐसा संग मिल जाता है तो उस घड़ी हम क्या करें! मैं उसके प्रभाव में न आऊं, मेरा उस पर प्रभाव पड़े। जो सतोगुणी हैं उस पर किसी का प्रभाव नहीं पड़ सकता, वह अपना प्रभाव दूसरे पर डालते हैं। सतोगुणी बुद्धि औरों को चेंज कर सकते हैं। जरा भी रजोगुणी होगा तो तमोगुणी अपना प्रभाव डाल सकता है।

एक तो याद अच्छी हो, याद में हमारा पुराना सब खत्म हो जाए। अभी सबके साथ सम्बन्ध-सम्पर्क होते, सेवा होते मैं इतना श्रेष्ठ कर्म करूं तब कर्मातीत बन सकूंगी। कर्म से न्यारा बनने से कर्मातीत नहीं बन सकती लेकिन श्रेष्ठ कर्म करने से कर्मातीत बन सकते हैं।

हिम्मते बच्चे मददे बाप का जो संबंध है, उसकी वैल्यु बहुत है। अनुभव कहता है, हो जायेगा। बाबा ने मेरे को पहले से ही वर्सा इनाम में दे दिया है। वर्सा है मुक्ति और जीवनमुक्ति। जैसे बाबा से मिली हुई गिफ्ट मुझे चला रही है। दु:ख हर्ता, सुख दाता..., एक है आशीर्वाद, दूसरा है गिफ्ट। दुआयें दो और दुआयें लो।

मैं समझती हूँ मेरे में अच्छा परिवर्तन आया है लेकिन दूसरे का मेरे प्रति गलत इम्प्रेशन है, यह कहना भी सिद्ध करता है कि मैंने भी वह बात नहीं भुलाई है तब दूसरों का इम्प्रेशन कैच होता है।

बाकी सूक्ष्म देह-अभिमान कईयों को पकड़ करके बैठा है। कोई बहुत बिजी होते हैं। कोई रोज़ अपना चार्ट लिखते हैं। कई बार सरकमस्टांश का ऐसा घेराव होता है जो अपना पुरुषार्थ कर नहीं सकते। लेकिन अच्छा पुरुषार्थ किया हुआ है तो कोई बात का घेराव नहीं हो सकता है। उसका हल निकल आता है।

17-2-12

संकल्प शुद्ध, शान्त, श्रेष्ठ, दृढ़ क्वालिटी वाला हो तो बाबा अन्दर ही अन्दर बल भरेगा

(दादी जानकी)

जिसे याद है मैं कौन, मेरा कौन? उसे खुशी का पारा चढ़ा हुआ है। दिल में अगर बाबा है तो दिल खुश हो जाती है क्योंकि खुशी जैसी खुराक नहीं है। तो फिर वह औरों को भी खुश करते रहेंगे यानि खुश रह खुशी बाटेंगे। दिल में बाबा होने से बाबा की बहुत बातें याद आती हैं। चिंतन में बाबा आने से उसकी सारी चिंतायें मिट जाती हैं। जहाँ सर्वशक्तिमान बाप साथ है, वहाँ डरने की क्या बात है। जो अच्छे बच्चे हैं उनको बाबा ही दिखाई पड़ता है। बाबा का प्यार, सूक्ष्म हमारी आत्मा में शान्ति और शक्ति भर रहा है। जब से बाबा के बने हैं, कोई बात मुश्किल नहीं है।

हिंसा, सत्यता से खत्म होती है, जहाँ सत्यता है वहाँ अहिंसा है, सत्यता शक्ति देती है। सच्चाई में शान्ति है। जिसे सच्चाई की शक्ति का अनुभव होता है, उसके पास हिम्मत है, हिम्मत है तो बाबा की मदद है। पहले साथ दिया साथी बनाने के लिये, अभी साथी बनाया है सेवा के लिये इसलिये सेवा में बाबा के साथ रहो, भगवान हमारा साथी है तो क्या करेगा काज़ी! सच्ची दिल से साहेब राज़ी। जहाँ साहेब राज़ी सब काम सहज है। बाबा की याद में सेवा करो। तो अपने ऊपर ध्यान रखने से संकल्प हमारा शुद्ध, शान्त, श्रेष्ठ, दृढ़ क्वालिटी वाला होगा। फिर बाबा अन्दर ही अन्दर और बल भरेगा। जहाँ सच्चाई और प्रेम है, वहाँ कोई कमी नहीं है।

भारतवासी धर्म भ्रष्ट, कर्म भ्रष्ट हो गये हैं गोया अपने ही देवी-देवता धर्म की ग्लानि कर रहे हैं। अपने को हिन्दू कहलाते हैं। यदा यदा ही धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत.... ऐसे भारत में ही भगवान आया है और आके सत् धर्म की स्थापना कर रहा है, इससे अधर्म का विनाश आपेही हो जाता है। जहाँ सच्चाई और सफाई है, वहाँ कोई कमी नहीं है। सुख पूछना हो तो हम बच्चों से पूछो। संसार में दु:ख बहुत है इसलिए बाबा कहते अब तुम भी मेरे समान दु:ख हर्ता सुख कर्ता बन जाओ, तो बाबा तुम पर बहुत खुश हो जायेगा। जिनके कर्म सुधरेंगे वही सतयुग में आयेंगे। सतयुग में आने के लिये श्रेष्ठ कर्म कर रहे हैं, सेवा कर रहे हैं, उसी के लिये सभी तैयारी कर रहे हैं। पवित्र बन रहे हैं, कर्मातीत बन रहे हैं। अगर स्व-चिंतन नहीं तो चिंता है, तो दु:ख है, दु:ख

है तो भय है। कल क्या होगा? किसी में विश्वास नहीं है, कौन करेगा? इसी चिंतन में टाइम वेस्ट करते रहेंगे।

अच्छा पुरुषार्थ करने का खाता बढ़ाते जाओ, शिवबाबा मेरा बाबा है, सेवा मेरा भाग्य है। तो भाग्यवान हैं जो सेवा में बाबा ने अपना बनाके रखा है। जितने अच्छे कर्म करते हैं उतनी कईयों के दिल से दुआयें निकलती हैं। पुण्य कर्म का खाता, अचानक कोई कहाँ भी प्रॉबलम में है तो ऐसे समय दुआयें ही काम करती हैं। जो पद का ख्याल रखते हैं वो सच्चाई और प्रेम, खुशी और शक्ति से अपनी जीवन यात्रा सफल करते हैं, वही राजाई पद पाते हैं। फिर भी कहेंगे हर बात में बाबा साथ है तो डरने की क्या बात है। ओम् शान्ति।

21-3-13

"मुरली के मनन से मन को कन्ट्रोल में रखो, मन और तरफ न जाये, बाबा और बाबा की बातों के तरफ ही बुद्धि लगी रहे तो सहज योगी बन जायेंगे"

- गुल्जार दादी

बाबा कहता है पुरुषार्थ करके सम्पूर्ण बनना है, तो उसके लिए मेरे को अपने दिल में रख दो। बस। बाबा हमारे दिल में है माना सदा साथ है तो हम अकेले नहीं हैं। बाबा बुद्धि में याद है माना जब बाबा साथ है तो भी बाबा की आज्ञा मानना सहज हो जायेगा। बाबा का काम है कहना, हमारा काम है करना इसलिए कोई भी पुरुषार्थ करने में मुश्किल नहीं लगता क्योंकि दिलाराम मेरे दिल में साथ में है, हम अकेले नहीं हैं। जैसे हमारे को बाबा इतना प्यारा है, ऐसे ही हमें दुनिया वालों को बताना है कि मेरा बाबा क्या है! जब दुनिया में प्रत्यक्ष हो जायेगा हमारा बाबा आ गया, तो यह दुनिया ही बदल जायेगी, जहाँ दु:ख और अशान्ति का नाम ही नहीं होगा। बाबा अभी यही चाहता है कि एक एक बच्चा मेरे समान बन जाये, जो सब देख करके खुश हो जाएँ। इसके लिए ऐसा पुरुषार्थ करना है कोई भी हमारी सूरत को देखे तो हमारे सूरत में बाबा उनको नज़र आवे। इसके लिए बच्चा बनके बाप को याद करने का पुरुषार्थ करो, बाप से जो वर्सा मिला है वो लो तो सहज ही बाप समान बन जायेंगे। मैं कौन और आप कौन? इस पहचान से हमारे कर्म और हमारे चलन से यह दिखाई दे कि यह किसके बच्चे हैं? क्योंकि जिसको भगवान मिल गया उसको और क्या रह जाता है! अरे भगवान हमारा हो गया और चाहिए क्या! भगवान के बच्चे, तो जो बाप का कर्म धर्म वो हमारा होना चाहिए।

ब्रह्मा बाबा फरिश्ता बना ना इसी दुनिया में यहाँ रहते भी। ब्रह्मा बाबा से हमारा बहुत प्यार है, ब्रह्मा बाबा कहने से ही खुशी की खुराक मिल जाती है। तो बी.के. हैं माना सदा खुश। मुरली के मनन से मन को कन्ट्रोल में रखो यानि मन और तरफ न जाये, बाबा और बाबा की बातों के तरफ ही बुद्धि जाये तो सहज योगी बन जायेंगे। इसके सिवाए और कहीं यहाँ वहाँ बुद्धि नहीं जाये तब दिल से निकलेगा मेरा बाबा। तो जब बाबा और मैं... बस, तो सोचो कितनी कमाई होगी। बातें होगी, बातें आयेंगी और खिटखिट भी होगी लेकिन कुछ भी हो कमल पुष्प को सामने रखो, पानी में रहते पानी से न्यारा। जिसका मन पर राज्य होगा, वही राज्य कर सकता है। तो जब तक जीना है तब तक खुश रहना है। यह वायदा हो कि जब तक जिन्दा हैं तब तक खुश रहेंगे, खुशी बाटेंगे। इसके लिए बाबा को एक सेकेण्ड भी अलग नहीं करो। चित्र में देखो ब्रह्मा बाबा कितना मुस्करा रहे हैं, तो सभी ऐसे खुश हैं? यह खुशी कब तक रहेगी? सबका दु:ख दूर हो गया? तो सभी अपने आपको चेक करना, अपने आप ही अपने दिल से पूछते रहना और अपना रिकॉर्ड खुद ही रखना कि आज का दिन खुशनुमा रहा? इसके लिए जो भी खराबी हो ना वो दिल से बाबा को दे दो तो खराबी की जगह खुशी से भर जायेगा। अच्छा।

दादी प्रकाशमणि जी के अमृत वचन

''दिल खुश और दिमाग ठण्डा रखो तो बाबा अपना काम आपेंही करा लेगा''

1) बाबा हम बच्चों को कहते बच्चे तुम मेरे नूरे रत्न हो, नूरं जहान हो। जहान के नूर हो। इन महावाक्यों में कितना रहस्य भरा हुआ है। सदा यह ध्यान रहे कि जहाँ हमें देख रहा है। भक्ति में ख्याल करते कि भगवान देख रहा है लेकिन अभी हम कहते जहान हमें देख रहा है। प्रैक्टिकल में देखा जाता है कि सारे जहान का ध्यान हम लोगों पर है। पवित्रता के योगबल से, दैवीगुणों के आधार से हम सतयुगी दैवी राजधानी स्थापन कर रहे हैं। भगवान करा रहा है। यह आटोमेटिक मुख से निकलता है। पवित्रता के बल से करा रहा है। हमें एक को याद करके विश्व में एकता लानी है। यह कार्य भगवान करा रहा है, इंसान के बस की बात नहीं है।

2) जास्ती गोरखधन्धे में जाने से, व्यर्थ सोचने से माथा खराब होता, हरदम दिल खुश, दिमाग ठण्डा हो तो बाबा अपना काम अच्छा करा लेगा। दिल से बाबा का काम करो तो बाबा की और परिवार की मदद मिलती है। गर्म दिमाग वाला कभी कोई काम नहीं कर सकता। ठण्डे दिमाग से काम अच्छा होगा। गर्म दिमाग वाला खुद भी बिगड़ेगा, काम भी बिगाड़ेगा। वह दिल को भी सुस्त, दु:खी, निराश बना देगा इसलिए कुछ भी हो जाए हमें दिलशिकस्त नहीं होना है, दिल को आराम में रखना है। ऐसा कोई काम नहीं करना है जो दिल खाये। आराम की नींद न आये। किया हुआ खाता है इसलिए सिर्फ अपने दिल को खुश करने के लिए या जिसके साथ प्रेम है, उसको खुश करने के लिए नहीं करो लेकिन भगवान को खुश करने के लिए करो। मेरी दिल या फलाने की दिल खुश हो, यह सोचकर कुछ किया तो सूक्ष्म गलतियां हो सकती हैं। बाबा क्या कहता है, ज्ञान क्या कहता है, यह सोचकर किया तो कोई गलती नहीं हो सकती।

3) आत्मा में शक्ति तब आती है जब राइट काम होता है - बिगड़ी को बनाने वाला, सत्य धर्म की स्थापना अर्थ कोई काम होता है तो सदा याद रहे कि मेरे से ऐसा कोई काम न हो जो बनी हुई बात भी बिगड़ जाए।

4) लोग समझते हैं जिसकी उम्र बड़ी होती है उसका दिमाग काम नहीं करता। लेकिन भगवान के जो बच्चे हैं, उनको भगवान की गुप्त शक्ति मिलती रहती है। जो सोचते हैं कि इनको इतना निर्भय, बड़ी दिल-वाला बनाने वाला कौन है। हम छोटी-मोटी आशायें रखकर अपने आपको खुश न कर लें। बुद्धि में जरा भी किसी चीज़ की आकर्षण न हो। इस संसार में कुछ भी अच्छा नहीं। अच्छा वह है जो कोई इच्छा न हो। घर जाना, उपराम रहना अच्छा है। बाबा के जो बच्चे गुम हो गये थे, जो मूर्छित हो गये थे, वह सुरजीत हो गये, यह अच्छा लगता है। यह फैमिली अच्छी लगती है, बाकी कुछ अच्छा नहीं। तो हर एक अपने दिल से पूछे कि मुझे क्या अच्छा लगता है? अच्छा यह लगता है कि योगयुक्त स्थिति रहे। कोई भी बात हो जाए हमें कोई हिला न सके। जो भगवान ने महावीर बनने का पार्ट दिया है वह अच्छा लगता है। पास विद आनर होना अच्छा लगता है।

5) ड्रामा की नॉलेज के आधार से अपने जीवन की इतनी रक्षा करो जो मान-अपमान का लेश भी न आये। ड्रामा की नॉलेज इतनी अच्छी है जो एक सेकेण्ड भी किसी बात का ख्याल नहीं चलता। अगर हम अपनी स्थिति को अचल बनाकर रखना चाहते हैं तो तीन बातें साथ हों:- 1. सहनशक्ति। 2. समेटने की शक्ति और 3. समाने की शक्ति। यह तीनों शक्तियां साथ हैं तो ड्रामा पर अडोल रह सकते हैं। अगर एक भी शक्ति कम है तो स्थिति हिल सकती है।

सेन्टर को निर्विघ्न बनाने के लिए दादी जी द्वारा बताई गई युक्तियां

1) टीचर्स जो नजदीक वाली हैं उनको कम से कम एक मास में आपस में मिलना चाहिए, अगर दूर वाले हैं तो दो मास में, तीन मास में मिलो। दूसरा कोई भी सेवायें हैं तो एक दो के मददगार बन सेवायें करो। और एक दो को सूचना दो, इसको ये करना है, इसको ये करना है... ये गवर्नमेण्ट की सर्विस करे, ये बिजनेस वालों की करे ... भले सब ड्यूटी लो परन्तु उसकी रिजल्ट एक दो को जरूर सुनाओ।

2) अगर किसी के कोई नजदीक है, या स्नेह सम्बन्ध है,

सम्पर्क है, कोई आते जाते हैं, कोई मिलते हैं, कोई कार्य करते हैं, सहयोग करते तो उसमें एतराज क्यों होता! थैंक्स मानना चाहिए या एतराज होना चाहिए? मुझे क्यों नहीं पूछा, तुम क्यों गई... ये कौन सी हमारी भाषा है! मै कौन हूँ, जो मुझे पूछा जावे! बेहद की सेवा है, दिल से करो, हाँ एक दो को खबर करो, वो अलग बात है। एक दो की दिल नहीं तोड़ो।

3) सन्तुष्टता माना एक दो का सम्मान करो। परन्तु प्लीज़ एक दो की दिल नहीं तोड़ो। कई बार सेवाओं की रिजल्ट के बदले एक दो की दिल तोड़ देते हैं। और फिर दिल तोड़के लम्बे-लम्बे पत्र दादी के पास आते हैं। दादी क्या करे? कहूँ आपको तो आपको बुरा लगेगा, कहूँ उसको तो उसे बुरा लगेगा। वो कहेंगे मैने राइट बोला, वो कहेंगे दादी ने उनकी सुनी, मुझे बोला, राँग बोला, अब मैं कोई वहाँ थी क्या जो राइट और रांग देखूं। फिर वो दो पार्टी करते। अगर उनकी नहीं सुनी गई तो चुप होकर, किनारा करके बैठ जाते, यह हमारे कौन से संस्कार हैं? ऐसे अनेक कारणों से मतभेद हैं।

4) हर एक अपना-अपना मीटर खुद ही देखो, क्या ऐसा कारण है जो हमारी आपस में दूरी है? हम एक दूसरे को स्नेह सम्मान देकर, उसी प्यार और रिगार्ड से मिलकर रहते हैं या दूर हैं? दूर हैं तो क्यों हैं? क्यों नहीं आपस में मिल जाते! अगर हमें इसमें छोटा बनना पड़ता, झुकना पड़ता तो क्या झुक नहीं सकते! बाबा हम सबको कहते मीठे बच्चे, तो हम मीठे क्यों नहीं रहते? हमारा आपस में कैसा व्यवहार है! तो हरेक स्व को चेक करो और दृढ़ता का संकल्प करो कि मैं स्व परिवर्तन अर्थात् संस्कार परिवर्तन करके जाऊंगी या जाऊंगा।

5) मेरा संस्कार क्या है, पहले उस संस्कार को रियलाइज़ करो। जो मेरे संस्कार में कांटा है, सेवा में कांटा है या दूसरे को कांटा लगता है या दूसरे को फील होता तो उसको परिवर्तन कर, उसी से ऐसा मेल करो जो आपस के संस्कार मिलन हो जाए। अगर हमें बाप समान कर्मातीत बनना है तो हिसाब चुक्तू करके बनेंगे या हिसाब रखकर बनेंगे? संस्कार परिवर्तन नहीं तो हिसाब चुक्तू नहीं इसलिए जो आपस में एक दूसरे से दिल दूर है, अरे क्या होगा, अगर मैं झुक कर आपको जाके प्रेम से सम्मान से, स्वमान से, रिस्पेक्ट से हाथ मिलाती... आज से हम हरेक कार्य मिलकर करेंगे। है ऐसी हिम्मत, इतना त्याग?

6) सेवाओं में जो भिन्नता आई है, उस भिन्नता को मिटाओ और सन्तुष्टता, प्रसन्नता और समीपता लाओ। जितना समीपता में आयेंगे उतना एक दो को सन्तुष्टता की सूक्ष्म शुभ भावनायें, कामनायें देंगे। तो आज सभी संस्कार परिवर्तन का शुभ मुहूर्त करो। वायदा करो हम सब सन्तुष्ट हैं, सदा आपस में सन्तुष्ट रहेंगे, ऐसा सन्तुष्टता का वरदान बाबा से लेकर जाओ और अपनी मनमत वा अपनी असन्तुष्टता त्याग करके जाओ। बोलो, पॉसिबुल है? जो करेंगे वह ऊंच बनेंगे। मैं करूंगी, मुझे देखकर और करेंगे इसलिए बाबा का मंत्र मिला स्व-परिवर्तन, संस्कार परिवर्तन... तो उसका आधार है स्व के संस्कारों का परिवर्तन, उसका शुभ मुहूर्त आज की तिथि में हम सब ऐसा प्रैक्टिकल करें, यही हमारी सबके लिए एक ही शुभ भावना है।

7) जैसे यह बात सभी नोट करते कि आप सभी को बाबा ने एक ढांचे में रखा है, हम सबके दिल से एक बाबा के सिवाए और कुछ नहीं निकलेगा। तो जब हम हैं ही एक बाबा के, कार्य बाबा का, नई दुनिया लाने वाला बाबा, विश्व बाबा की तो हम क्यों मैं-मैं, मेरा-मेरा करूँ इसलिए मैं और मेरे को तेरा तेरा करो, तो बाबा ही रक्षक बन चलाता है और हम सभी उसकी रक्षा में चलते हैं। हम भी चलें, दूसरे भी चलें, सब ऐसा एक होकर चलें। दादी कहती ये मेरी एरिया, ये तेरी एरिया... इसको तो खत्म करो। न मेरी एरिया है, न तेरी एरिया है, सारा ही भारत, सारा विश्व हमारा है। हम सभी का नाम ही है बी.के. तो हम क्यों नही बेहद परिवार को स्नेह भरी, सम्मान भरी, स्वमान भरी दृष्टि से देखते! एक दो को सम्मान दो स्वमान में रहो, समीप रहो तब प्रसन्नता का सर्टीफिकेट एक दो को दे सकेंगे।

8) हम सभी दादियों का तो आपस में बहुत प्यार है, मैं नहीं समझती हूँ कभी हमारे संस्कार की लड़ाई हुई हो। तो क्यों नहीं आप सभी ऐसे साथी मिलकर साथी होकर रह सकते। चाहे पाण्डव हैं, चाहे शक्तियां हैं, कुछ इसका रास्ता निकालो। हम एक हैं, हम एक हैं, ऐसा सन्तुष्टता का सबको सर्टीफिकेट दो और लो, एरिया तेरी मेरी नहीं, ये सब बाबा की है, किसी की नहीं है। एक बाबा सामने लाओ तो निवारण है, नहीं तो अनेक कारण हैं। अच्छा - ओम् शान्ति।

सभी ब्राह्मण कुलभूषण भाई-बहनों को मधुबन तपोभूमि से बापदादा, सभी वरिष्ठ दादियों तथा वरिष्ठ भ्राताओं की ओर से ईश्वरीय स्नेह सम्पन्न याद स्वीकार हो।

आपको यह बताते हुए अति हर्ष हो रहा है कि ईश्वरीय सेवाओं में नवीनता तथा आध्यात्मिक प्रभाव लाने के प्रयास के फलस्वरूप रेडियो मधुबन कम्युनिटी सोसायटी (Radio Madhuban Community Society) की स्थापना इस वर्ष अप्रैल में हुई। इस कम्युनिटी सोसायटी के आधार पर कॉरपोरेट सोशल रिसपॉन्सबिल्टी (Corporate Social Responsibility) तथा सस्टेनोबिल्टी इनिशोटिवस (Sustainibility Initiatives) की विभिन्न कार्य योजनाओं को ईश्वरीय सेवाओं में शामिल किया जा सकता है।

अत: सभी दैवी भाई-बहनों से निवेदन है कि आपके क्षेत्र में नामीग्रामी अथवा बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के इस कार्य को संभालने वाले अधिकारी से सम्पर्क करें, उन्हें इस कम्युनिटी सोसायटी की गतिविधियों की जानकारी समय-प्रति-समय देते रहें। आप उनसे डोनेशन भी ले सकते हैं।

सभी ब्राह्मण कुलभूषण भाई-बहनें इस कम्युनिटी सोसायटी की सदस्यता प्राप्त करना चाहते हैं, वे rmcs@bkivv.org पर ई-मेल करें। सदस्यता प्रवेश शुल्क 500/- रुपया है, वार्षिक सदस्यता 5,000/- रुपया है और अगर आजीवन सदस्य बनना हो तो 50,000/-रुपया राशि है।

कम्युनिटी सोसायटी के बारे में अधिक जानकारी
फोन से भी प्राप्त कर सकते हैं।
मोबाइल : 9414154343, 9414092420